डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

वाचिक एवं जनजातीय साहित्य पर संगोष्ठी एवं आदिवासी कवि सम्मिलन

13 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली। साहित्योत्सव के दूसरे दिन वाचिक एवं जनजातीय साहित्य पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दिनांक 13 फ़रवरी 2018 को पूर्वाह्न 10.30 बजे उद्घाटन सत्र हुआ जिसमें उद्घाटन वक्तव्य दिया लब्धप्रतिष्ठ विद्वान श्री मृणाल मिरी ने। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात भाषा वैज्ञानिक एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष श्री बी. बी. कुमार ने की। प्रख्यात विदुषी सुश्री तेमसुला आओ ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सहभागिता की। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्याय के कुलपति प्रो. टी.वी. कट्टीमनी ने उपयुक्त विषय पर बीज वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. कें. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि संसार का कोई भी देश भारत की भाषायी विविधता का मुकाबला नहीं कर सकता। भारत में अथाह और अमूल्य वाचिक साहित्य व संस्कृति उपलब्ध है और यह हमें धरोहर के रूप में मिली है। युवा पीढ़ी को अपनी समृद्ध परंपराओं का ज्ञान हो सके इसलिए आवश्कता है कि इसे संरक्षित, संपोषित और प्रोत्साहित किया जाए। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा इस दिशा में किए गए कार्यों की विस्तार से जानकारी दी।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रख्यात विद्वान श्री मृणाल मिरी ने कहा कि सभी भाषाओं की अपनी स्वायत्ता होती है और सभी भाषाएँ पूर्ण रूप से शुद्ध होती हैं, उन्हें अनुवाद के माध्यम से उसी शुद्धता के साथ प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। उन्होंने वाचिक और जनजातीय साहित्य के गुणों की चर्चा की और अन्य साहित्यों तथा संस्कृतियों के बरअक्स इसकी विशिष्टताओं पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास ऐसी अमोल धरोहर उपलब्ध है, जिसमें प्रकृति और पर्यावरण के साथ मनुष्य के जीवन के संबंधों की सहजीवी सुंदर कथा है। यदि हम वाचिक साहित्य और जनजातीय संस्कृति को गंभीरता से समझ लेते हैं तो आज हम वैश्विक स्तर जिन संकटो और समस्याओं से जूझ रहे हैं उनके समाधान का रास्ता हमने सहज ही मिल सकता है।

विशिष्ट अतिथि सुश्री तेमसुला आओ ने वाचिक और जनजातीय साहित्य और संस्कृति के सूक्ष्म तत्त्वों पर प्रकाश डाला। उन्होंने आदिवासी लोगों के दैनिक जीवन–व्यवहार के उदाहरणों के माध्यम से कहा कि आदिवासियों के लिए शब्द प्राणवंत होते हैं। वे उनके साथ रहते हैं और उन पर भरोसा करते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी कई भाषाओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद होना कठिन है क्योंकि उसके लिए अंग्रेज़ी में शब्द ही उपलब्ध नहीं हैं।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात विद्वान श्री बी.बी. कुमार ने वाचिक और जनजातीय साहित्य पर विमर्श आयोजित करने के लिए अकादेमी को धन्यवाद देते हुए कहा कि यह अकादेमी की ओर से वाचिक साहित्य के संरक्षण और प्रोत्साहन क्षेत्र में किया गया एक महत्त्वपूर्ण कार्य है और इस दिशा में और अधिक कार्य करने की आवश्यकता भी है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि स्वाधीनता प्राप्ति के 70वर्षों बाद भी इस समृद्ध भारतीय साहित्य को संरक्षित करने के लिए हम अधिक कुछ नहीं कर सके हैं। भारत को समझना है तो हमें वाचिक और जनजातीय संस्कृति को समझना चाहिए। वाचिक साहित्य का संरक्षण,

(जारी...)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

उसका अध्ययन आवश्यक है, बगैर इसके हम भारतीय संस्कृति को सूक्ष्मता से नहीं समझ सकेंगे। इसके लिए उन्होंने कुछ विशेष सुझाव भी दिए और अकादेमी से कुछ और भी कार्य करने की प्रस्तावना की, और अपना सहयोग देने का भी आश्वासन दिया।

बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात विद्वान प्रो. कट्टीमनी ने कहा कि आदिवासी क्षेत्रों में संस्कृति नहीं बल्कि संस्कृतियाँ है क्योंकि उन क्षेत्रों में अनेक भाषाएँ है और प्रत्येक की अपनी संस्कृति है। उन्होंने कहा हर भाषा की अपनी संस्कृति होती है और संस्कृति के साथ भाषा का प्रगाढ़ नाता होता है। इसीलिए जब संस्कृति ख़त्म होने लगती है तो भाषा अपने आप खत्म हो जाती है। उन्होंने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि जिन भाषाओं का वाचिक रूप ही उपलब्ध है और उन भाषाओं को जब हम बोलने, गाने और व्यवहार में लाने की प्रक्रिया बंद कर देते हैं तब वे भाषाएँ संकट में आ जाती है। हमारे जीवन–विधान बदल रहे हैं और इसका असर हमारी संस्कृति पर पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि वाचिक परंपरा को जीवित रखने के लिए उसे बोलने वालों का जीवन भी बचाना आवश्यक है, सिर्फ रिकार्डिंग करने या लिखित रूप में लाने से ही वाचिक व जनजातीय साहित्य और संस्कृति की यह परंपरा बचाई नहीं जा सकती।

अगले विचार सत्र की अध्यक्षता महत्त्वपूर्ण सामाजिक चिंतक और विद्वान डेज़्मंड खार्मावफ्लाङ ने की तथा इस सत्र में डी. कोली, जोथोनछिंगि खियाङटे और ओम प्रकाश भारती ने अपने सुचिंतित गंभीर आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में श्री डी. कोली ने पर्यावरण आलोचना और लोकसाहित्य, श्री जोथोनछिंगि खियाङटे ने लिंग और वाचिक साहित्य तथा श्री जगदीश कुमार पंकज ने आदिवासी संस्कृति के प्रदूषित किए जाने पर केंद्रित अपने आलेख पढ़े।

द्वितीय सत्र आदिवासी कवि सम्मिलन का था जिसमें अर्जुन सिंह धुर्वे (बैगा), राजकिशोर नायक (बाथुडी), कुलदीप सिंह बम्पल (भोटिया), सुदर्शन भूमिज (भूमिज), कुलीन पटेल (धोडीआ), कोलनट बी. मरक (गारो), रफ़ीक़ अंजुम (गोजरी), रूप सिंह खुश्राम (गोंडी), वीरा राठौड़ (गोरमती), रुद्र नारायण पाणिग्रही (हल्बी), कैरासिंह बांदिया (हो), ऑन तेरान (कार्बी), कलाचंद महाली (महाली) तथा मिनिमॅन लालू (खासी) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने एक कविता अपनी मूलभाषा में पढ़ते हुए कविताओं का हिंदी या अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

सत्र का संचालन साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने की तथा सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सूचना दी कि यह संगोष्ठी कल 14 फ़रवरी 2018 को भी जारी रहेगी।

(के. श्रीनिवासराव)

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

लेखक सम्मिलन
लेखकों के वैविध्यपूर्ण रचना संसार की प्रस्तुति
निराला के पास मिथकीय बिम्बों की सबसे बड़ी सम्पदा है – रमेश कुंतल मेघ
बहुत ज्यादा लिखना भी रचनात्मकता को नुकसान पहुँचाता है –– मो. बेग एहसास

नई दिल्ली, 13 फ़रवरी 2018 । साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2017 से पुरस्कृत लेखकों ने अपनी रचना प्रक्रिया को लेखक सम्मिलन में पाठकों से साझा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने की।

हिंदी के लिए पुरस्कृत रमेश कुंतल मेघ ने अपने वक्तव्य में कहा कि दुनियाभर के मिथकों में अद्भुत समानता पाई जाती है। अलगाव के इस दौर में जब हम पूरब–पश्चिम के बीच की दूरियों की बात करते हैं, उनमें उतनी सच्चाई नहीं है, जितना कि प्रस्तुत की जाती है। उन्होंने मिथकों के भारतीय परिप्रेक्ष्य के बारे में बोलते हुए कहा कि निराला हिंदी या भारत के ही नहीं, बल्कि दुनिया में मिथकीय बिम्ब प्रयुक्त करने वाले सबसे बड़े कवि हैं।

उर्दू के लिए पुरस्कृत मोहम्मद बेग एहसास ने अपनी बात रखते हुए कहा कि मैंने कृशनचंदर पर पी–एच.डी. करते समय ढेरों कहानियों का अध्ययन किया। दिल और दिमाग रौशन हो गए। दिल ने कहा कि अगर अपनी कोई शैली बना सकते हो तो कहानियाँ लिखो वरना तो बहुत कुछ लिखा जा चुका है। मुझे कृशनचंदर से यह सबक भी मिला कि बहुत ज्यादा लिखना भी रचनात्मकता को नुकसान पहुँचाता है।

सभी पुरस्कृत लेखकों ने क्रमवार अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए। सबसे पहले असमिया लेखक जयंत माधव बरा ने कहा कि मैं अपनी मातृभाषा में लिखकर अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ। मेरे लिए सच्ची मानवता ही प्रेरणा का मुख्य स्रोत है। मैंने मानवता के पक्ष में उठी हुई आवाज़ों का समर्थन किया है।

बाङ्ला लेखक आफसार आमेद ने कहा कि बचपन में माँ से सुनी हुई कथाओं से उनको शिक्षा मिली। उन्होंने कहा कि उन कथाओं को अपनी कल्पना शक्ति से नई कहानियों के रूप में प्रस्तुत कर आम लोगों के जीवन में दिन–प्रतिदिन आने वाली मुश्किलों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मेरा सामाजिक जीवन मुस्लिम समुदाय के काफ़ी नज़दीक था, जिसके कारण मेरी कहानियों के पात्र अधिकतम वो ही रहे।

बोडो के लिए पुरस्कृत लेखिका रीता बर' ने अपनी पुरस्कृत कृति *थैसाम* के बारे में बताते हुए कहा कि यह एक गरीब और उपेक्षित औरत की संघर्ष–कथा है, जो अपनी सौतेली माँ के अत्याचारों से पीड़ित है। पति की आकस्मिक मृत्यु के उपरांत वह अपने इकलौते पुत्र के साथ अपनी जीवन–यात्रा पुनः आरंभ करती है। वहाँ की स्थानीय सामाजिक रीति–रिवाजों और नशे की प्रवृति पर यह उपन्यास प्रकाश डालता है।

डोगरी के लिए पुरस्कृत शिव मैहता ने विभाजन के समय को याद करते हुए कहा कि उस जीवन की प्रेरणा तथा आकाशवाणी के लिए काम करते हुए लेखन में बहुत सहायता मिली।

अंग्रेजी के लिए पुरस्कृत ममंग दई ने अपनी पुरस्कृत कृति *द ब्लैक हिल* के बारे में बताते हुए कहा कि उनकी यह पुस्तक फ्रेंच प्रीस्ट फादर निकोलस माइकल क्रिक के बारे में है जो मिस्मी जनजातीय के एक महानायक थे, जिन्हें ब्रिटिश सेना ने मौत की सजा दी थी।

गुजराती में पुरस्कृत कृति *गुजराती व्याकरणनां बसो वर्ष* की लेखिका गुजराती की प्रख्यात आलोचक और भाषाशास्त्री उर्मि घनश्याम देसाई ने ने कहा कि इस पुस्तक में मैंने गुजराती भाषा में विभिन्न दशकों की लंबी अवधि के मूलपाठों की छानबीन द्वारा सामाजिक–राजनीतिक शक्तियों के सांस्कृतिक इतिहास को प्रस्तुत किया है।

कन्नड के लिए पुरस्कृत टी.पी. अशोक ने कहा कि मैं पुस्तकप्रेमी परिवार से आता हूँ और मेरे पिता हिंदी शिक्षक थे। मेरे पिता मुझे परिवार के अन्य शिक्षित लोगों की तरह डॉक्टर बनाना चाहते थे किंतु मेरे पिता मेरे द्वारा साइंस छोड़कर साहित्य पढ़ने से नाराज हुए। उन्होंने अपने लेखकीय व्यक्तित्व को बनाने में अपने शिक्षकों की भूमिका को बड़े आदर से याद किया। उन्होंने कहा कि मैंने इस पुरस्कृत कृति में भारतीय साहित्य के साथ–साथ विश्व साहित्य के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

...2/=

कश्मीरी में पुरस्कृत अवतार कृष्ण रहबर, कोंकणी में पुरस्कृत गजानन रघुनाथ जोग, मैथिली में पुरस्कृत उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', मलयाळम् में पुरस्कृत के.पी. रामनुन्नी ने भी अपने सृजनात्मक अनुभव पाठकों से साझा किए।

मराठी में पुरस्कृत श्रीकांत देशमुख ने कहा कि मेरी कृति का सम्मान महाराष्ट्र के सूखा पीड़ित और भूमिरहित किसान परिवारों का भी सम्मान है, जो अपने जीवन–यापन के लिए संघर्षरत हैं। कवि वर्तमान का संवेदनशील प्रतिनिधि होता है इसीलिए मेरी नजर में अच्छी कविता सदैव समकालीन होती है। मैं स्वयं को कृषक कवि मानता हूँ। अध्यात्म की चौखट में रहते हुए भी तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि संतों ने जिस विद्रोह को प्रस्थापित किया था वह सांस्कृतिक विद्रोह ही था और बतौर कवि मैंने स्वयं को आधुनिक विमर्श के स्तर पर इसी परंपरा से जोड़ रखा है।

नेपाली में पुरस्कृत वीणा हाङ्गखिम, गायत्री सराफ (ओड़िया), जगदीश लछाणी (सिंधी) और टी. देवीप्रिया (तेलुगु) ने भी अपने विचार पाठकों के साथ साझा किए।

पंजाबी में पुरस्कृत नछत्तर ने अपनी सृजन प्रक्रिया के बारे में बोलते हुए कहा कि दसवीं कक्षा में पढ़ते हुए नानक सिंह और जसवंत सिंह कंवल के उपन्यास पढ़कर ही जेहन में यह खयाल आया कि कहानी अथवा उपन्यास ही ऐसे साधन हैं, जिनके द्वारा मैं अपनी बात सही ढंग से दूसरे तक पहुँचा सकता हूँ। मेरा पुरस्कृत उपन्यास *स्लो डाउन* विश्व में आई आर्थिक मंदी के उस दौर को प्रस्तुत करता है, जिस कारण हजारों नौजवान बेरोजगार होकर सड़कों पर आ गए थे।

राजस्थानी में पुरस्कृत नीरज दइया ने अपने लेखक होने का श्रेय अपने पिता को देते हुए कहा कि उन्हें भी यही पुरस्कार 1985 में प्राप्त हुआ था। पुरस्कृत कृति का शीर्षक *बिना हासलपाई* राजस्थानी आलोचना–कृति है। राजस्थानी लोक में इसका अभिप्राय बिना लाग–लपेट के तथ्यपरक कहन से जुड़ता है।

संस्कृत के लिए पुरस्कृत निरंजन मिश्र ने कहा कि मेरे पुरस्कृत महाकाव्य की कथा स्वामी निगमानंद स्वामी के जीवन तथा कार्यों से संबंधित है, जिन्होंने अपना जीवन गंगा हो दूषित होने से बचाने के लिए समर्पित कर दिया।

संताली में पुरस्कृत भुजंग टुडू ने अपनी पुरस्कृत कृति के बारे में बताते हुए कहा कि इस कविता–संग्रह उन्होंने प्रकृति पर हो रहे अत्याचार को उजागर किया है। मेरा उद्देश्य साहित्य के माध्यम से यह संदेश देना है कि मानवता का हनन न हो। देश दुनिया में शांति कायम रहे और जो लोग पिछड़े हैं उन्हें आगे बढ़ने का अवसर मिले।

अंत में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने सभी पुरस्कृत लेखकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि उनको पुरस्कृत कर साहित्य अकादेमी का भी गौरव बढ़ा है। लेखक हमेशा ही जरूरतमंद लोगों की आवाज को प्रस्तुत करता रहा है और यह लेखन प्रक्रिया निरंतर ही जारी रहेगी। लेखक हमेशा जिसका कोई नहीं, उसका दर्द व्यक्त करता रहेगा।

(के. श्रीनिवासराव)

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

भारतीय–इज़राइली लेखक सम्मिलन

13 फरवरी 2018, नई दिल्ली। साहित्योत्सव के दौरान दिनांक 13 फ़रवरी 2018 को अपराह्न 2.30 बजे साहित्य अकादेमी के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में भारतीय–इज़राइली लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। भारत और इजराइल के मध्य राजनयिक संबंधों के स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर यह विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें इज़राइल से पधारे महत्त्वपूर्ण हिब्रू साहित्यकारों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने इज़राइली लेखक दल का स्वागत करते हुए कहा कि भारत और इजराइल के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध लगभग 1000 ई.पू. से है। बावेरू में भारतीय व्यापारियों का संदर्भ एक बौद्ध कथा में मिलता है। सोलोमन किंग के समय में टर्शिश जहाज़ों और अन्य विभिन्न उल्लेखों में ऐसे संदर्भ दोनों देशों में मिलते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदुइज़्म और ज़्यूडिज्म के बीच कई समानताएँ हैं। भारत उपमहाद्वीप में आज बड़ी संख्या में ज़्यूडिज़्म के अनुयायी दूसरे संप्रदायों के साथ शांति, सौहार्द और आपसी सहयोग बनाए हुए निवास करते हैं। दोनों देशों में प्राचीन और समृद्ध साहित्यिक विरासत है। भारत और इज़राइल में विभिन्न साहित्यिक परंपराएँ हैं जिनमें रहस्यवादी रंग भी है।

उन्होंने कहा कि नवंबर 2017 में भारतीय लेखकों का एक दल साहित्य अकादेमी द्वारा इज़राइल भेजा गया था और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के क्रम में इज़राइल के लेखक भारत आए हैं। भारत और इज़राइल के बीच राजनयिक संबंधों की सीपना के 25 वर्ष का अवसर इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इससे दोनों देशों की साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषिक परंपराएँ एक दूसरे के पास आ सकेंगी। उन्होंने साहित्य अकादेमी के कार्यों एवं गतिविधियों के बारे में भी चर्चा की।

कार्यक्रम में श्री मेयर औज़िएल ने इज़राइल के हिब्रू राइटर्स एसोशियन के अध्यक्ष तस्विका नीर का संदेश पढ़कर सुनाया और उसके बाद इज़राइली लेखकों ने अपने विचार व्यक्त किए। सुश्री अदीवा जेफ्फेन ने हिब्रू पुरातत्व के बारे में बताया। सुश्री दोरित सिल्वेर्मन ने अपनी एक कहानी प्रस्तुत की। सुश्री अविवित लेवी कापच ने हिब्रू भाषा और उसके पुनरुत्तीन आदि के बारे में बताने के बाद अपनी एक सुंदर कविता भी पढ़ी। सुश्री स्मादर शीर ने बाल लेखन एवं अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में बताया। सुश्री हावा पिन्हास कोहेन ने हिब्रू भाषा में अपनी कविताएँ प्रस्तुत की और अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में भी विस्तार से बताया।

भारतीय भाषाओं के लेखकों ने इजराइल से पधारे लेखक दल के सदस्यों से वहाँ की भाषा, साहित्य और संस्कृति के विषय में जिज्ञासाएँ कीं, जिनका यथोचित समाधान हिब्रू लेखकों ने किया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी का 32वाँ संवत्सर व्याख्यान दिया प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने

13 फ़रवरी 2018, नई दिल्ली। साहित्योत्सव के दौरान प्रख्यात कन्नड लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. एस. एल भैरप्पा द्वारा दिनांक 13 फ़रवरी 2018 को सायं 6.00 बजे साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में 32वाँ संवत्सर व्याख्यान दिया गया। इस संवत्सर व्याख्यान का विषय था –'एसेंट टू व्यास गुहा' (व्यास गुफा की यात्रा)।

संवत्सर व्याख्यान के पूर्व साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने प्रो. एस.एल. भैरप्पा के साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनका अभिनंदन और स्वागत किया। डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भैरप्पा जी ने अपने वैचारिक साहित्य और चिंतन से न सिर्फ़ कन्नड साहित्य व विचार पंरपरा को, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रतिष्ठता दिलाई है।

प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने अंग्रेज़ी भाषा में व्याख्यान दिया। व्याख्यान के प्रारंभ में अपने बौद्धिक और सांस्कृतिक निर्माण को स्पष्ट करने के लिए प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने अपने प्रारंभिक जीवन संघर्षों और कार्यकारी जीवन के विभिन्न पड़ावों का ज़िक्र किया। उन्होंने उन साहित्यिक विभूतियों के बारे में भी बताया जिनकी रचनाओं को पढ़कर उन्होंने अपनी समझ विकसित की। उन्होंने फ़िलासफी (दर्शन) के बारे में प्लेटो का सिद्धांत– 'फिलोसोफिया' (Philo Sophia)– 'लव ऑफ विज़डम' (प्रेम की स्वतंत्रता) है जबकि अरस्तू के 'मेटाफ़िजिक्स' (आत्मतत्त्वज्ञान) के अनुसार जहाँ 'विज्ञान' की सीमा समाप्त होती है वहाँ से 'दर्शन' का आरंभ होता है। मोटे तौर पर यह भारतीय सिद्धांत – 'अधि+आत्म', 'तत्+त्व+ज्ञान' या 'तत्त्वशास्त्र' के अनुरूप ही है। उन्होंने कहा लेकिन आधुनिक पाश्चात्य खोजें आधुनिक भौतिक वैज्ञानिक सिद्धांतों की विभिन्न छायाएँ मात्र हैं।

प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने कहा कि हम अत्याधुनिक तकनीकी जीवन प्रणाली को आत्मसात् करने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मृत्यु के प्रति जागरूकता भारतीय दर्शन की मूलभूत चेष्टा है।

श्री भैरप्पा ने अपने व्याख्यान में विभिन्न प्राचीन समकालीन भारतीय तथा विदेशी दार्शनिक चिंतकों के हवाले से दर्शन के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि 'वेदों' का सारतत्त्व 'उपनिषद्' में है, 'उपनिषदों' का सारतत्त्व 'भगवद्गीता' और बादरायण के 'ब्रह्मसूत्र' में है। उन्होंने आदिशंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, भास्कराचार्य, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, श्रीकांत और कई अन्य दार्शनिक मनीषियों द्वारा की गई टीकाओं/मीमांसाओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि वेदों की प्रबोधात्मक परंपराओं को इन सूत्रों और उन की टीकाओं/मीमांसाओं के मूलतत्त्व को मात्र बौद्धिक ही समझ सकते हैं। उन्होंने कहा कि वेदों और उपनिषदों के सारतत्त्व को आम जनता तक दो महाकाव्यों– 'रामायण' और 'महाभारत' ने पहुँचाया है, बिना उपदेशात्मक परंपरा के। प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने कहा कि 'आइडिया' (विचार), 'आइडियल' (आदर्श) और 'आइडियालोजी' (विचारधारा) के बीच में बहुत बड़ा अंतर होता है। उन्होंने इस अंतर को विस्तार से स्पष्ट किया।

अपने महत्त्वपूर्ण व्याख्यान के अंतिम भाग में प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने बताया कि बद्रीनाथ में एक गुफा है जिसे 'व्यासगुहा' कहा जाता है। 'स्थलपुराण' के अनुसार, इसी गुफा में महाभारतकार ने निवास किया था और मानवता का महानतम महाकाव्य लिखा (बोलकर लिखाया) था। यह एक ऐतिहासिक 'मिथ' है या एक तीर्थ स्थान की पवित्रता का निर्माण करने वाला 'मिथ', हम नहीं जानते। एक लेखक जो इस 'मिथ' का अर्थ नहीं प्राप्त कर पाता वह इस 'व्यासगुहा' की ऊँची चढ़ाई की दुर्गम यात्रा में एक क़दम भी नहीं चल सकता।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रो. एस.एल. भैरप्पा का स्वागत करते हुए कहा कि संवत्सर व्याख्यान साहित्य अकादेमी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्याख्यान शृंखला है और इसी क्रम में यह 32वाँ संवत्सर व्याख्यान प्रो. एस.एल. भैरप्पा द्वारा दिया जा रहा है। उन्होंने प्रो. एस.एल. भैरप्पा का परिचय देते हुए कहा कि भारतीय साहित्य जगत् में आपका विशिष्ट स्थान है। इस अवसर पर प्रो. एस.एल. भैरप्पा द्वारा दिए गए संवत्सर व्याख्यान को पुस्तकाकार प्रकाशित और लोकार्पित भी किया गया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने ऐतिहासिक व्याख्यान के लिए प्रो. एस.एल. भैरप्पा के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सभी उपस्थित साहित्यप्रेमियों और लेखकों के प्रति आभार प्रकट किया।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in